बाजी बधैया सवेरे सवेरे,
लली कीरति ने जाई सवेरे सवेरे।।

गोपीहू नांचै ग्वालाहू नाचै
सब कौउ नाचै सवेरे सवेरे, लली कीरति..।
नंद जू नांचै जसोदा जू नांचै
कीरति जू देखै सवेरे सवेरे, लली कीरति..।
गैया हू नांचै बछराहू नांचै
ठैलरा हू नांचै सवेरे सवेरे, लली कीरति..।
भानु बाबा हू नांचन लागै
हंसति जसोदा सवेरे सवेरे, लली कीरति..।
पंलगा में नंद लाल पौढ़े
किलकत नांचै सवेरे सवेरे, लली कीरति..।।

------o------

सुन्दर भानुराय की बेटी।।

नंदराय को ढोटा मोहन, भुज भरि तासौं भेटी
कोटि कामशर मूर्छित हरि की बाधा साधा मेटी
वश करि पिय चेटी सी करिकै विहरति कुंजन लेटी
बांध्यो लट लटकन ते नागर, बंधन कटि की फेंटी।

दधि माधुरी

दोहा-श्रीराधा पद पद्म रस पगी रसीली भूमि,
प्रणवौं श्रीवृषभानुपुर लता लूम रहीं झूमि।
गहवर वन अरु सांकरी गलियन लीला होय,
तब ही अनुभव होत जब भाव सरस हिय पोय।।

रसिया

खोर सांकरी की गलियन में,
मांगै दान दही कौ श्याम।।

इतते आईं भानुदुलारी, सखी सहेली संग में भारी
शीश दधि माखन दूध अपार
बड़ौ तन पै जोबन को भार
सजी सोहैं सोरह श्रृंगार

दोहा-ताहू पै गहनान ते लदी भईं ब्रजनार,
प्रेम भार हू ते भरीं तनीं चलीं ज्यों धार।
कानन झनक सुनी अनवट बिछुवन पायल अभिराम।।

सुनतइ आये दान विहारी
टोल सखन कौ लैकैं भारी

तिलक गल छप्पा मुख पै धार
फूल पत्ता ते कर सिंगार
कान में कुण्डल झुब्बादार

दोहा-बेरन की गुंजान की फल-फूलन की माल
रंग बिरंगी धातु तन सोहैं गेरू लाल।
लकुट हाथ लै हेला दैंके रोकीं ब्रज की बाम।।
हेला ते न रुकीं ब्रजनारी
ग्वारन कूँ चली दैंके गारी

पड़े आड़े जब श्रीनन्दलाल
मोह गईं सबरी ब्रज की बाल
न जाने कहा बखेर्‌यो जाल

दोहा-ठाड़ी है रहीं ठगी सी आगे श्रीब्रजचन्द,
रूप अनूपम देखती हंस बोलै नन्दनन्द।
तुम बारन सौं दान मांगवौ यही हमारौ काम।।
इतनी सुनत हंसीं ब्रजनारी
इत में मुसके दान बिहारी

कही सुन नंद बाबा के लाला
सुन्यौ तेरे घर कौ बड़ौ हवाल
मांगनो सीख्यौ उल्टी चाल

दोहा-ब्रजराजा कौ लाड़िलौ मांगमांग कें खाय,
दूध दही के कारनें चोरी करवे जाय।
इन बातन ते लाला तेरौ सबै निकारैं नाम।।
इक तौ ब्रज में चोर कहायौ
विधि नें कारौ रंग बनायौ

कौंन तोय बेटी देगौ ब्याह
बने तुम डोलौ लैकें चाह
भरे मन में ब्याहन कौ उछाह

दोहा-काजर बैंदा तिलक ते सजे धजे तैयार,
दान अनेकन कौ धरे मन में भारौ भार।
ऐसे ते कहा प्यास बुझै चाहे मांग फिरौ सब गाम।।
कृष्ण कहैं सुन भोरी-भारी
मोमें औगुन तनक न प्यारी

रही तू क्यों इतनी इतराय
नेंक से दधि पै हू गरवाय
रूप तेरौ मोकूं रह्यौ भाय

दोहा-मेरो रंग है सोहनों चन्दा हू लजियाय,
तुम्हरी ही अँखियन कौ खोट रह्यौ दरसाय।

श्याम रंग की छाप लगै जब और रंग बेकाम।।
सब बातन को तोर यही है
सुन लै मेरी बात सही है
बड़े राजा हैं श्री वृषभान
करैं जाचक कौ वे सनमान
आस पुरवैं वेई जिजमान
दोहा-बड़े घरन की लाड़िली रही तिहारे साथ,
मेरे दान मान की लज्जा उनके हाथ।
दाता बड़ी उदार गुनीली श्रीराधा रस भाम।।
नाम सुन्यो वृषभानु दुलारी
खिल रही जैसे चन्द उज्यारी
सखिन कौ हुक्म दियौ इक साथ
दूध दधि सौंपो इनके हाथ
दीनता इनकी हमरे माथ
दोहा-मेरे बाबा नृपति की फिरैं दुहाई नित्त,
बरसाने नहिं राखिहौं जाचक कोई दुचित्त।
यही आस ते पर्‌यो बड़ौ प्यारौ बरसानौं धाम।।

------o------

तेरे मन में कहा बसी है, मेरौ मारग रोक्यो आय।
न कोऊ और पास ह्यां री
घिरी मैं इकली मतवारी
मधुर मुसक्यावै गिरिधारी
सिर ऊपर मटकी दधि की मैं निकसूँ कैसे हाय।
हमारौ दान देओ प्यारी
यहाँ की रीति यही न्यारी
चतुर तुम हो बिछुवा वारी
बहुत दिना में आज हमारे हाथ परी मन भाय।
साँवरे जोरूँ तेरे हाथ
अकेली और न कोऊ साथ
ऊजरौ ना होवैगो माथ
या ब्रज के सब हैं उत्पाती लाज हमारी जाय।
लाज ते कहा सरैगो काम
दान दधि को दै मांगै श्याम
होय यहाँ दाता ही कौ नाम
इतनी सूम बनें मत गौरी दान देत घबराय।

बनाओ बात बहुत तुम लाल
पिटे तुम मैया ते हो काल
न छूटै इतने हू पै जाल
मात-पिता गोरे तुम कारे, कुल को रहे लजाय।
पिता माता को देति हवाल
डरै ना नेंकहु अपनौ ख्याल
बजावै री क्यों इतनों गाल
आज लेऊँगो दान यहीं क्यों आँखें रही दिखाय।
चली ग्वालिन बच कै कतराय
पकर लई मोहन नें झट जाय
छुड़ाई बांह सखी इठलाय
झटका पटकी मटकी फूटी दही चल्यो ढरकाय।
गली यह धन्य साँकरी खोर
मिले ग्वालिनको श्याम किशोर
चली गहवर को लै चित्तचोर
धन्य धन्य ब्रजधाम जहाँ ऐसौ आनन्द दरसाय।

------o------

दधि लूट लियौ दगरे में, कुंजन ते तनक परे में।।
आय रही दधि बेच वृन्दावन साँझ भई दिन ढुर रह्यो रे,
जमुना नीर तीर बन मारग मेरे मन रस घुर रह्यो रे,
इकली देख मोय बीच बनी के झपट लियो गहरे में।
छोड़दे कान्हा बेर भये घर सास देय मोय गारी रे,
तानों दै दै जायगी ननदिया रार करैगी भारी रे,
सबरी सखी चबाव करैंगी हंसी होय सगरे में।
अरी गूजरी बहुत दिना ते तू मेरे मन बस रही री,
वा दिन बच गई बात बनायके चाल बहुत तू जानैं री,
वा दिन लूट्यो मो मन हँसके नखरेई नखरे में।
कंचन मोल दही है मेरो कहा ग्वारिया खावैगो,
कंचन मटकी ऐंड़इ कंचन कैसे कोई लेवैगो,
सेंत मेंत मे कंचन चाहै झगरेई झगरे में।
कैसे सेंत मेंत में चाहूँ दान लऊँ सब मेरो है,
ब्रज में मैं ब्रजराज कहाऊँ कहा नाय तू जाने है,
बीच डगर में ग्वालिन लुट गई संकरेई संकरे में।।

------o------

अनोखौ छैला ठाढ़ो मांगै दही कौ दान।।

दधि मटकी लै निकसी घर ते
आय मिल्यो जानें वह कित ते
देखन लग्यो एक टक टक ते
लकुटिया दै दियो आड़ो मारग रोक्यो आन।
इत उत देखूँ कोइ न पावै
लाज लोक की मोय डरपावै
भीतर ते जियरा सकुचावै
पर्‌यो मोपै यह गाढ़ौ कौंन देय ह्यां कान।
झटका पटकी करन लग्यो वह
फूटी मटकी दही चल्यो बह
मीठे बोल सुनावै कह कह
दही लैकैं मुख माड़्यो मैंने न राख्यो मान।
आय पर्‌यो वह मेरे गोहन
अपनो मुख यह लाग्यो पोंछन
अंचरा छोरन साड़ी कोरन
प्रेम कौ सागर बाढ़्यो ऐसी भई पहचान।

बरसाने वारी दैजा दान, बड़ो प्यासो रसिया।।

गोरो मुख घूंघट में चमकै
तेरे झुमके झूमैं कान, बड़ो प्यासो रसिया।
माथे बेंदी चम-चम चमकै
लट लटकै गालन आन, बड़ो प्यासो रसिया।
नथवारी के मोती चमकै
तेरे रच रहे होठन पान, बड़ो प्यासो रसिया।
नैनन कजरा नोंक नुकीली
ये मारै बान कमान, बड़ो प्यासो रसिया।
चाल चलत लंहगा सैंकारै
चोली की गजब उठान, बड़ो प्यासो रसिया।
कमर कोंधनी रुनझुन बाजै
बिछुवा भर रहे तान, बड़ो प्यासो रसिया।
फहरावै फरिया और फुंदना
लटकत लगै महान, बड़ो प्यासो रसिया।
रूप तेरो उड़-उड़ के खावै
तेरी घायल करै मुसकान, बड़ो प्यासो रसिया।

ब्रज की सब गोरिन में तेरी
अजब निराली शान, बड़ो प्यासो रसिया।
ऐसी ना चहिए मुख मोरी
मेरी कर जोरे की मान, बड़ो प्यासो रसिया।।

------o------

मोय दैजा दधि कौ दान गुजरिया बरसाने वारी।।

या मारग ते नित ही निकसौ, भरी गरूर गुमान।
दान दही कौ आज लेऊँगो, तुम सब रस की खान।
ठाले डोलौ तुम क्यों लाला, मेंटौ कुल की कान।
मैं तो ब्रज कौ चन्द्र छबीलौ, ठाले कैसे जान।
बिना दान के जान न दूँगो, ये ही मेरी आन।
सुनके मुसक्याई वह ग्वालिन,हरि कौ राख्यौ मान।
अपने हाथन दह्यो खवायो, कर लीनी पहचान।
बहुविधि दान दियो चित्तचोरहि, दीयो नागर पान।
गली सांकरी रस में डूबी, कोयल गावै गान।।

------o------

कान्हा तोर ला पतौआ तोये प्याय दऊँगी दही।।

यों मत रोकै मोहन प्यारे
निकसैंगी हम सांझ सकारे
देख हँसेगे ये गैलहारे
मेरे प्यारे मोहन मेरी मान तो सही।
बहुत पुरानी मेरी दोहनी
घुट-घुट के अब भई चीकनी
रंग रंगी ये बड़ी मोहनी
फूटैगी ये छांड़ दै मेरी बैंया जो गही।
चढ़े कदम पै कुँवर कन्हैया
भाज चली वह छुम्मक छैया
साफ निकर गयी चतुर लुगैया
चोरी करूँ आज मैं तेरे हरि ने खीज कही।
दूर गई वह देखत श्यामहि
गूंठा मार रही नंदलालहि
उंगरी चाट-चाट दिखरावहि
उड़ गई मैंना देखत देखत मन की मनहि रही।

मीठी तेरी छाछ पिवाय दै प्यारी मन भरके।।

कहा डार कें दही जमायो
मीठो बहुत भयो मन भायो
मैंने लीयो चाख, पिवाय दै प्यारी...।
तू मीठी तेरो मनुआ मीठो
दूध दही माखन सब मीठो
सांच कहूँ मैं साख, पिवाय दै प्यारी...।
बहुत दिना कौ रसिया प्यासौ
भागन ते तू मिली कहाँ सों
काहे चुरावै आँख, पिवाय दै प्यारी...।
मन भाई सी टहल कराय लै
मुरली सुनलै नाच नचाय लै
मेरे मन की राख, पिवाय दै प्यारी...।
तेरी लऊँ बलैंया गवालिन
बिक जाऊँ मैं तेरी गारिन
धीरे ते कुछ भाख, पिवाय दै प्यारी...।

------o------

आओ आओ रे सखा, घेरो घेरो रे सखा,
दही लैकैं ग्वालिन जाय रही।।

बरसाने की सांकरी गलियन
जाय रही ब्रजनारी झुण्डन
चलो चलो रे सखा, आओ आओ रे सखा,
सब गोपी चलीं न जांय कहीं।
दूध दही के मांट भरे हैं
माखन अपने सीस धरे हैं
मैंने जानी रे सखा, पहचानी रे सखा,
सौंधी ही सुगंध है आय रही।
झांझर झनक सुने है कानन
बिछुवन की भई घोर झनाझन
दौरो दौरो रे सखा, गली रोकौ रे सखा,
गये सांकरी गली दही वारी रोकही।
गीतन की हू घोर सुनी है
ऐसी मानो लाल मुनी है
देखो देखो रे सखा, धाओ धाओ रे सखा,
आड़े भये सबन की गैल गही।।

आयो मोहन हमारे, वो तो कर गयो काम करारे।।

हौलै हौलै घर में आयो
मैं भोरी सी जान न पायो
पीछे ते मेरी आँख मींच कें गालन मूंठा मारे।
मैं बोली तू नंद को लाला
हम भोरी हैं ब्रज की बाला
झिक कें माखन दूंगी तोकूं पीछे ते हट जा रे।
जब वह मेरे सामई आयो
दौना भर माखन धरवायो
हौलै-हौलै सब गटकायो मोपै जुलम गुजारे।।

------o------

माखन दै दै तनक गुजरिया, अपनी मटकी तनक उतार

कौंन गाँव की रहवे वारी
नई नवेली बिछुवा वारी
कैसी डोल रही मतवारी
चाल चलै झोंके ते प्यारी लम्बो घूंघट मार।

हम ते मत मांगै तू माखन
पीछे आय रही लै मांटन
देंगी माखन तोकूं चाखन
सास ननद भारी झगरेंगी मोकूं होत अवार।
तेरोई मैं लूंगो माखन
तू मीठी मदवारी ग्वालिन
दै-दै लै अपने ही हाथन
श्याम नाम मैं बंशी वारो कर लै मोते प्यार।
मत रोकै तू गैल हमारो
भारी माट बोझ है भारो
कहा बिगरैगो श्याम तिहारो
चरचा होय गाँम में हमकूं है जाय देश-निकार।
लई उतार श्याम नें मटकी
मांखन खायो खबर न तन की
गप्फा मार रह्यो लोनी की
जान न पायो श्याम फेंट ते बंशी लई निकार।।

------o------

कान्हा मेरे माखन खायवे आवैगो कि नांय।।

दऊंगी माखन की सदलोनी,
मिसरी भोग लगावैगो कि नाय।
कदम की डारन झूला डार्यो,
संग-संग मोय झुलावैगो कि नाय।
मेरी बगिया में फूल खिले हैं,
फूलन तोर गुंथावैगो कि नाय।
हरे-हरे गोबर अंगना लिपायो,
संग-संग मोय नचावैगो कि नाय।
ऊंची अटरिया पै पचरंग पलका,
मेरी अटरिया पै जावैगो कि नाय।।

------o------

कोई मोते लै लेओ री गोपाला।।

दधि को नाम न लेवै ग्वालिन, टेरत मदन गोपाला।
जिनको नाम श्याम सुन्दर है, है यशुदा के लाला।
वृन्दावन की कुंज गलिन में, नटखट नैन विशाला।
बनी बावरी कुंज गलिन में, ढूंढ़त ब्रज हरि ग्वाला।।

छोड़ दै गैल हमारी काहे को ठानी तैंने रार।।

भयो नंद को तू उतपाती तैंने चराई गायं
घर-घर करै खखोरा चोरा चोरी माखन खाय
मान जा बात हमारी, काहे को ठानी..।
देस हमारो गैल हमारी हम ब्रज के सिरताज
हमरी हो तुम सब ब्रजनारी दान लेऊँगो आज
खोल दै मटकी प्यारी, काहे को ठानी..।
सबरो ब्रज वृषभान बबा को जाकी बसते छांह
बांह पकर कैं नंद बसाये याते रोकै राह
यही है रीति तुम्हारी, काहे को ठानी..।
देश भानु को लली भानु की भानु हमारे माथ
दयो दहेज सबै कछु जा दिन पीरे कीये हाथ
भई तुम सब घर वारी, काहे को ठानी..।
कैसी बात बनावै छलिया हम ना भोरी भारी
चोरन के कहुं ब्याह होत हैं को दे बेटी प्यारी
बाप (नंद) की बात बिगारी, काहे को ठानी..।

मटकी फोरूं हरवा तोरूं जो ना देंगी दान
नांचूं गाऊं तोय रिझाऊं जो राखेगी मान
रही तू बड़ी गमारी, काहे को ठानी..।
आप गमार गमार ग्वारिया दधि के लूटनहार
पहले नाचो गाओ हमकूं रिझवो कृष्णमुरार
मान रखेंगी भारी, काहे को ठानी..।
फेंटा कस नांचे गिरिधारी बंशी मधुर बजाय
रीझ गईं सद माखन लोनी हाथन रहीं खवाय
जुरी गिरिधर सों यारी, काहे को ठानी..।।

------o------

आजा आजा नंदलाल दही मीठो।।

ऐसो मीठो कबहु न खायो, लडुआहू है गयो सीठो
बरसाने को सब कुछ मीठो, दूध दही माखन मीठो
पै भागन ते मिलै नंद के, करनों परै बहुत नीठो
ऐसी भईं सब ढीठ गोपिका,ऐसोइ तू बन गयो ढीठो
ग्वाल ऊपर ग्वाला ठाढ़े, ठाढ़ो तू सब कै पीठो
तो यह पायी दही मथनियां,भजचल कहूं न परै दीठो
आय गई तौ लौं घरवारी, खाय भजै मारै गूंठो।

सांवरिया जान दै काहे मारग रोकै श्याम।।

सजनियां प्याय दै दधि, हाथ पसारै श्याम।।
सांवरिया कल फिर आऊंगी
आज तो छोड़ दै तेरे हाथन जोरूं श्याम।
सजनियां कल कौनें देखी
आज ही प्याय दै तेरी हा-हा खावै श्याम।
सांवरिया घूंघट मत खोलै
हंसी होवैगी मेरी ये बुरी बान है श्याम।
सजनियां मुख कैसे देखूं
धार कजरा की बुरी ये घायल है गयो श्याम।
सांवरिया राह छोड़ दही लै
नांय यशुदा सों तोहि पिटवाऊंगी मैं श्याम।
सजनियां मैया ते पिटवैयो
हाथ दोऊ जोरे गोरी तेरे आगे खड़ो है श्याम।।

------o------

चली है मटकी लैकैं, चली है मटकी लैकैं,
अरी दधि बेचन ब्रज की वाम चली है।।

आगेई मिल्यो गुपाला, संग लिये पांच दस ग्वाला
घेर्‌यो खोर सांकरी धाम, चली है..।
अब दान देओ तुम प्यारी, माखन की मटुकी भारी
मेरो माखन चोरा नाम, चली है..।
नांय सेंतमेंत में माखन, ना दूंगी तोकूं चाखन
ठालो डोलै तू बेकाम, चली है..।
मैं नंद महर को वारो, मत समझै मोय गमारो
मेरो नामी है नंदगाम, चली है..।
चल हट क्यों मारग रोकै, लपटा झपटी क्यों टोकै
मैं ऊंचे घर की वाम, चली है..।
बिन दान लिये ना जाऊं, चाहे गारी सौ-सौ खाऊं
गारी दै लै मेरो नाम, चली है..।
कछु नांच गाय नंदलाला, तब दान देय ब्रजबाला
धमकी ते न बनैं यह काम, चली है..।
मोहन ने नांच दिखायो, ब्रजबाला सबै रिझायो
तब दधि दान दियो ब्रजवाम, चली है..।।

जा रे जा रे मोहना रे छोड़ गैल तो मेरी।
दैजा दैजा दही वारी दही की गगरी।।

आयो बड़ो बन ठन करके सिंगार,
छैला बन्यो डोलै बड़ो चोर लबार,
हट जा रे बजमारे नांय तेरी चेरी।
ऐसी इतरावै बड़े गोप की सी नार,
तेरी जैसी डोलैं दही वारी हजार,
नेंक घुंघटा तो खोल ओ घूंघट वारी।
दही के बहाने घूंघट काहे खोलै,
हट जा हट मोते काहे बोलै,
जाय मैया ते कहूंगी सब बात तेरी।
मैया ते मोकूं पिटवाय लीजो,
दही तो नेंक चखाय दीजो,
भई नई पहचान गोरी तेरी मेरी।।

------o------

कैसे मांगै दान गंवार ढीठ तू सांवरिया।
कैसी बोलै नार गंमार ढीठ तू फूहरिया।।

हरे बांस की पोली बंशी लै कितनों इतरावै
तोर मरोरूंगी काऊ दिन देखत ही रह जावै
है बैरिन सोत छिनार ये तेरी बांसुरिया।
बंसी सुनवे कूँ काहे तू दौरी-दौरी आवै
मन में भावै मूड़ हिलावै तेरो भेद न पावै
नांय बंसी सौत छिनार अरी सुन गूजरिया।
चार टका की कामर औढ़ै कैसी धोंस जमावै
वन-वन डोलै गाय चरावै लूट लूट दधि खावै
ऐसो डोलै ज्यों बटमार तू ठालो सांवरिया।
तू कामर कौ भेद न जानें मन में बनी सयानी
तू भी छिपी कामर की खोई बरस रह्यो जब पानी
अब नखरे करै हजार ओढ़ रंग चूनरिया।
तू कारो तेरी बंशी कारी कामर कारी-कारी
चोरी और बरजोरी तेरी सबरी बात है कारी
कारे हैं तेरे यार लुटेरे बावरिया।

बड़ी मटक्को बड़ी चटक्को कारे कह-कह बोलै
मन की कारी भेद बड़े तेरी कारी अंखियां खोलै
चले गलबैंयन को डार कुंज की डागरिया।।

------o------

गोरी बच के चली कहाँ कूं, नज़रिया फेर फेर फेर।
कन्हैया दधि बेचन कूं जाऊँ,रोकै मत घेर घेर घेर।।

बहुत दिना में हाथ परी है
खिल रही जैसे फूल छरी है
आज सब दान चुकाऊँ,मटकिया गेर गेर गेर।
कान्हा सास बड़ी लड़हारी
ननदुल गारी देय हजारी
देख कहुँ बलम न आवै, है रही देर देर देर।
गोरी झूठे सबै बहाने
नैना तेरे हैं मस्ताने
छबीली काहे झूठी बात बनावै ढेर ढेर ढेर।
दूर निकस गईं तेरी गैयां
ढूंढैगो तू कैसे कन्हैया
देख बलदाऊ भैया रह्यो तोय टेर टेर टेर।।

श्याम तैंने काहे को रार मचाई।।

इकली घेरी गली सांकरी कैसे करूं मेरी माई।
ऐसौ कोई नाय या ब्रज में
छैद करै ऊपर बादर में
नंद महर को बड़ो लाड़लो अकल गई बौराई
आप सयानी बनैं छबीली
मोहि बावरो कहै रसीली
दान देत क्यों सूम बनै सूमन ते परी लराई
कहा बात को दान संवरिया
रोकी तैंने काहे डगरिया
मोहि बताय गंवार ग्वारिया वन-वन गाय चराई
लिये जात तुम दधि औ माखन
मटकी खोल मोय दै चाखन
मोय गंवार बतावै ठग्गो आँखें रही दिखाई
श्याम तिहारो ही सब माखन
कल आऊँगी तोहि चखावन
आज छोड़ दै देर होत है तेरी हा-हा खाई

जो मेरो माखन तो गोरी
अबई खवाय दै बांकी छोरी
दै दियो दान सजन मोहन को अपने हाथ खवाई।।

------o------

दै जाओ तुम दान अरी औ ग्वालिनियां।
हम ना देंगी दान अरे औ सांवरिया।।

नित-नित बच-बच चली जात तुम ग्वालिनियां,
आज परी हो हाथ हमारे ग्वालिनियां।
सुनत रही बटमार बसै ह्यां सांवरिया,
दृष्टि परे तुम आज हमारे सांवरिया।
दान दिये बिन ना जाओगी ग्वालिनियां,
बड़ी सयानी नार सबै तुम ग्वालिनियां।
दान दियो ना कबहू हटो तुम सांवरिया,
काहे ठानी रार अरे तुम सांवरिया।
नई नई दधि बेचनहारी ग्वालिनियां,
नयो हमारो दान अरी सुन ग्वालिनियां।
कैसे लेवन हार अरे सुन सांवरिया,

काहे कौ यह दान अरे सुन सांवरिया।
दही दूध आभूषण बसनन ग्वालिनियां,
जोवन कौ है भार अरी सुन ग्वालिनियां।
टेढ़े तुम और टेढ़े बोलो सांवरिया,
कारे चोर लबार अरे सुन सांवरिया।
तुमरे कारे नैन बैन जिय ग्वालिनियां,
टेढ़ो कारो मोहि कर दियो ग्वालिनियां।
या विधि मांगै दान लियो है सांवरिया,
बतरस प्रीति कौ दान लियो है सांवरिया।।

------o------

दान मैं तो नाय दऊंगी औ नंदलाला।
दान मैं तो लै लऊंगो औ दही वारी।।

कितनोई करलै जतन सांवरिया
पास न आऊँगी, दान मैंतो नाय दऊंगी।
मैं तो तेरे गौहन आयो
मटकी लै लउगो, दान मैं तो लै लऊंगो।

बटमारी बरजोरी लूटै
जाय कंस कहूंगी, दान मैं तो नाय दऊंगी।
धौंस दिखावत कंस ममा की
काऊ दिन मारूंगो, दान मैं तो लै लऊंगो।
ठगिया बात बनावत ठग सौं
नाय छूवन दऊंगी, दान मैं तो नाय दऊंगी।
ठगनी फंदा फांसन वारी
ठग्गो बताय दऊंगो, दान मैं तो लै लऊंगो।
हम तो सूधी हैं ब्रजनारी
सूधी जाऊंगी, दान मैं तो नाय दऊंगी।
सूधेपन के साज न तेरे
सूधी बनाय दऊंगो, दान मैं तो लै लऊंगो।
तीन ठौर ते टेढ़ो रसिया
टेढ़ ना छोड़ूंगी, दान मैं तो नाय दऊंगी।
मन की टेढ़ी टेढ़ी बोलै
टेढ़ निकारूंगो, दान मैं तो लै लऊंगो।

बंशी जादू सी जादू में
मैं ना आऊंगी, दान मैं तो नाय दऊंगी।
टोना तेरें चंचल नैना
टोना देखूंगो, दान मैं तो लै लऊंगो।
मुसकावै कछु मूठ चलावै
मूठ मिटाय दउंगी, दान मैं तो नाय दऊंगी।
चाल चलै कछु मंतर पढ़ कैं
जंतर मैं पढ़ूंगो, दान मै तो लै लऊंगो।
बसी करन करतो सो डोलै
बस नाय होऊंगी, दान मैं तो नाय दऊंगी।
पीछे पीछे तू डोलैगी
तोय नचाय दऊंगो, दान मैं तो लै लऊंगो।
पक्के गुरू की हूं मैं चेली
आँख दिखाय दऊंगी, दान मैं तो नाय दऊंगी।
हम तो तेरे तू है मेरी
आँख मिलाय लऊंगो, दान मैं तो लै लऊंगो।
बातन प्रीति जुरी दोउन की
दह्यो पिवाय दऊंगी, दान मैं तो दै दऊंगी।।

नाय छोड़ै री मेरी कलैयां।
दान देय तो छोड़ूं कलैयां।।

कैसे करूं मैं नार अकेली
पहले पहले ही आई नवेली
नाय मानैं री ढीट कन्हैया, नाय छोड़ै री..।
पहलै अपनी मटकी धर दै
अपने हाथन लौनी दै दै
तब छोड़ूं मैं तोय लुगैया, दान देय तो..।
तेरे जोरुं हाथ संवरिया
पैंया परूं मेरी छोड़ डगरिया
दूखैगी मेरी नरम कलैया, नाय छोड़ै री..।
हा हा खाऊं मैं हूं तेरी
लेऊं बलैयां तेरी गोरी
दैदे दूर गईं मेरी गैयां, दान देय तो..।
दान देत मुसकाई नारी
हंस हंस दान लियो गिरिधारी
कैसी प्रीति जुरी है दैया, नाय छोड़ै री..।।

मटकी बरसाने में फोरेंगे, नंदगांव के ग्वाल।।

आठें राधा जनम बधाई
भादों सुदी त्रयोदशी आई
बूढ़ी लीला ब्रज में गाई
बन ठन ग्वाला ह्वां आवेंगे संग सजे नंदलाल।
सजी धजी सब गोपी आईं
चिकसौली की मटकी लाईं
माखन दही लिए सब धाईं
सखा दान बिन ना जावेंगे, नाचैं दै दै ताल।
रोकी गोपी सिर पै मटकी
कहां चली तुम ठिठकी ठिठकी
तेरे बाबा की ना हटकी
हम लूट-लूट दधि खावेंगे हंस बोले गोपाल।
झटका पटकी मटकी फूटी
माखन दूध दही सब लूटी
रस की सरिता सबनें घूंटी
ये लीला सब गावेंगे जो कीनी वा काल।।

समझाय लै अपनों कान्ह, यानें मटकी मेरी फोरी।।

तू जानें याही भोरो भारो
बालक है नादान, या नें मटकी..।
सबरे ब्रज में हल्ला है रह्यो
रानी तू लै मान, या नें मटकी..।
हम तो कान करैं तेरो जायो
अटकै बिन पहचान, या नें मटकी..।
माखन सटकै आँख दिखावै
चोरी की परी बान, या नें मटकी..।
तू जानें याय सीधो साधो
ये सब औगुन की खान, या नें मटकी..।
दही दान के धोखे हमते
मांगे जोवन दान, या नें मटकी..।
नांचै मटकै सैन चलावै
छेड़ै वंशी की तान, या नें मटकी..।
गैल चलत खैंचै अंचरा
मुख पोंछै पीक औ पान, या नें मटकी..।
गैल गिरारे आड़ो है कें

दान की ठानैं ठान, या नें मटकी..।
सबरे ब्रज में पूछ लै मैया
याय जानैं सबै जहान, या नें मटकी..।
मैया यों समझावै सबकूं
धीरज राखो कान, या नें मटकी..।
आवन दै तू श्याम सलोने
ऊखल बांधूंगी आन, या नें मटकी..।।

-------o-------

कैसे नाहिं करूं जब दधि मांगै,
अंखियन में भर-भर पानी।।

प्यारो वह नंद जू को छैया, कर जोर परै मेरे पैंया
कैसे मुख फेरूं जब आशा सों देखै मोकों मनमानी।
मैं चतुर नार करी चतुराई, घूंघट ते देखत पछताई
कैसे आँख चुराऊं वाते है गई नई-नई पहचानी।
बचके मैं चली किनारो देय, चुनरी पकरी मेरो नाम लेय
कैसे कानन मूंदूं कहै मोते जब प्यारी वह दधि दानी।
वह छाय गयो मेरे हियरे, बस रह्यो वो नैनन में मेरे
कैसे रोकूं जागत सोवत रटती, कृष्ण नाम यह बानी।

भम्भो जो नांय देगी दान, आज तेरी चोरी है जायगी।।

पहले ते कह दऊं मैं ग्वालिन
आई नई बिरज के गामन
नयो रंग नयो है जोवन
दान देन की रीति मान लै नाय पछतावैगी।
कैसो दान कहाँ को है तू
नारी पराई रोकै क्यों तू
कामर कारी कासे है तू
मैया ते जाय कहूँ पिटाई तेरी है जायगी।
गोरी मैया ते कह ऐयो
पर तू बिना दान मत जैयो
दान देत तू मत घबरैयो
मेरे मन में बस गई लाजो बच नांय जावैगी।
बड़ो लाड़लो बड़े महर को
कछु तो सोच नंद राय को
नाम हंसावै जसुदा जू को
टेड़ी चाल छोड़ दै नंद के बात बिगर जायगी।

मटकी लै दधि लाग्यो खावन
भाज गई लै बंसी ग्वालिन
टेर कह्यो तब नंद के लालन
आजहि रात घुसूं घर तेरे जब तू मानेंगी।

------o------

दहिया मथ रही रई घमरकन, माखन खाजा सांवरिया।।

सब धौरिन को दूध कढ़ायो औटायो मन करके,
जामन दैके दह्यो जमायो सौंधो गाढ़ो करके।
सास ननद घर नांय अकेली मैं ही दह्यो चलाऊं,
आजा प्यारे बंसीवारे गाय गाय के बुलाऊं।
खीर खांड़ धर कनक कटोरा अपने हाथ खिलाऊं,
अंचरा ते तेरी ब्यार करूं और मन कर लाड़ लड़ाऊं।
जागत श्याम श्याम टेरूं सोवत तेरे सपने देखूं,
कबै सवेरो होवै तोकूं लोनी खामत देखूं।।

------o------

लाल वृषभ-दोहन

गाय छोड़ हरि दुह रहे नाटे, राधा रूप दिवाने हैं।

आये भोरई श्याम खिरक में
राधा मुख देखन की मन में
लिये सखा कछु अपने संग में
कियो बहानो गाय दुहन को घुस बरसाने हैं।
सुन के आये हैं गिरिधारी
चली दुहावन भानुकुमारी
कनक दोहिनी लैकें प्यारी
जोवन नयो रूप सोनो नैना मनमाने हैं।
देखत भूल रहे नंदलाला
बिन पी भाँग भये बेहाला
झुक्यो मुकुट गिरि मुरली माला
इकटक नैना लगे प्रिया मुख देख भुलाने हैं।
खबर रही ना कहाँ है गैया
वृषभ एक तंह पकर कन्हैया
बांधे पांव नोय कर लैया
थन पंसावत देख दूर ते सखा हंसाने हैं।
सखा एक बोलै सुन प्यारे
जल्दी दुह लै नन्ददुलारे

दोहनी भर दै वंशी वारे
सुनें न कछुक श्याम राधावश प्रीति लुभाने हैं।।

------o------

जसुदा मैया लाल तिहारौ भारौ औगुनगारौ है।।

जा दिन मैं या ब्रज में आई
गौने की मैं नई लुगाई
वाई दिन ते घात लगाई
रसिया गावै लेय नाम यह बकै उघारौ है।
इक दिन बहू रूप धर आयो
आन गाँम की मोहि बतायो
याके ढोंगन मन पतियायो
एक रैन को मांग बसेरो जुलम गुजारो है।
बड़े भोर ये गयो हमारे
जान न पाई मैं अंधियारे
पति के से हेला तब मारे
गई पास मिल भेट्यो मेरो घूंघट टार्‌यो है।
धार काढ़वे गई खिरक में
जुलम कियौ यह अंधियारे में
नाट्यो बांध्यो गाय ठौर में
थन पंसावत सबरो मूठा भर्‌यो हमारो है।।

साँझी लीला

फुलवा बीनें राधा प्यारी भोरी रंग रंगीली बाल।।

गोरे तन पै सारी नीली
फरिया लाल कंचुकी पीली
बोलन मीठी बहुत रसीली
घूम घुमारौ लहंगा घूमै, मतवारी है चाल।
उत ते आये श्याम बिहारी
रसिया बड़े चतुर बनवारी
अचक देखवे कौतुक भारी
खेल रही जहाँ गोप कुमारी, छिप के बैठे लाल।
कोउ द्रुमन की डार नवावैं
कोउ रंगीले फूल चुनावैं
कोउ गिरे फूलन बिनवावैं
पातन के दोना में रख के कोउ बनावै माल।
बीनत फूल दूर गईं संग की
बैठ रही ह्वां लली भानु की
खिली उजारी चन्द्रवदन की
सम्मुख आय गये मनमोहन, देख मनोहर काल।

दोनों रूप रंग कौ झेलैं
सैनन ही ते सांझी खेलैं
देखन ही में करैं किलोलैं
अँखियन ही में उरझत जावैं सुरझन के नहि ख्याल।

------o------

सांझी खेलैं छैल छबीली,राधा श्रीवृषभानु दुलार।।
बैठी सिंह पौर अलबेली
सजी धजी सब सखी सहेली
झोरी फूलन भरी नवेली
आई एक नई सी कोई, श्याम रंग सुकुमार।
देख छकीं सब रूप अनोंखो
हाव भाव दिखरावै चोखो
मिलवे लगीं तनक नाय धोखो
आदर दै कें पास बिठार्‌यो, आसन सुन्दर डार।
पूछन लगीं कौन की जाई
कैसे बरसाने में आई
मेरे मन को रही लुभाई
ऐसे पूछ रहीं जब प्यारी, बोली बचन संभार।

मैं हूँ सांझी चीतन हारी
नन्दगाँव की रहवे वारी
तुमरो नाम सुन्यौ मैं प्यारी
खेलूँगी मैं संग तिहारे, जब तुम देंगी प्यार।
दै गलबैंया चली लाड़िली
मुसकाई वह चित्त चाड़िली
रस भीजीं भई प्रेम माड़िली
श्याम सखी जब सांझी चीतै, देखैं ब्रज की नार।
सुन्दर सी सांझी चितवायो
सुन्दर मीठे गीत गवायो
सुन्दर व्यंजन भोग लगायो
मन भाई सी करै आरती, लै कैं कंचन थार।
ललिता हाव भाव पहिचान्यो
ये तो नन्दलाल मैं जान्यो
ऐसोई सबकौ मन मान्यो
तारी दै दै हँसी सखी सब, आनंद भयौ अपार।

------o------

वन विहार

गगन में कौन उड़ै, मोहि मोहन देहु बताय।।
सुन राधे प्यारी ये हंसा सब पक्षिन कौ राय
लिये हंसिनी नभ में बिहरै मोतिन चुग-चुग खाय
पंख धौरे ऊजरे।।१।। गगन में..
देखो श्रीवृषभानु नन्दिनी कोयल गुन की खा
कुहू-कुहू की बोलन मीठी हर ले सबके प्रान
बोल सब मोहने।।२।। गगन में..
ये तोता हरियल है दीखै ऐसौ घनौं मलूक
चौंच लाल कछु पीरी गरदन तीखी याकी कूक
देख तन सोहने।।३।। गगन में..
ये है मेरौ प्यारौ मोरा बोलै घोरा धोर
रंग-बिरंगी पैंचन वारौ नाचैं पंख मरोर
देख घन घोरने।।४।। गगन में..
श्यामा देखो सारस लम्बी गरदन ऊँची टाँग
छांड़ै प्रान न सहै वियोगहि मीठी याकी
प्रीति रंग बौरनै।।५।। गगन में..

मुरली माधुरी

तेरी बंशी ने कियो कमाल रे, मुरली के बजैया।।
चढ़ी विमान मगन भईं देवी
काम जगे ते खुल रही नीवी
ढीली किंकिणी जाल रे, मुरली के बजैया।
गैयां घांस चरैं नेंकहु ना
मुरली सुनती सुध हु रही न
भूल रहे सब ग्वाल रे, मुरली के बजैया।
नदियां थम गईं बंशी सुनकै
पानी चढ्यो श्याम के पग पै
लाईं कमलन माल रे, मुरली के बजैया।
वृक्ष लदे सबरे फूलन ते
सींच रहे ब्रज मधु धारा ते
जंह ठाढ़े राधा लाल रे, मुरली के बजैया।
तोता मोर हंस पक्षी तब
दरसन कर सुधि भूल गये सब
फस मुरली के जाल रे, मुरली के बजैया।

बंशी सुन नभ बादर आये
गरजत ताल देत हैं सुहाये
बरसैं फूलन माल रे, मुरली के बजैया।
बछरा दूध नेंक ना पीवें
मोहड़े दूध घूंट ना लेवैं
दूध भरे हैं गाल रे, मुरली के बजैया।
वन के पक्षी उड़नों भूले
लटक रहे ऊपर को झूले
सब वृक्षन के डाल रे, मुरली के बजैया।
बंशी सुन हिरनी हैं आईं
घेर रहीं सब कुंवर कन्हाई
जैसे सब ब्रज बाल रे, मुरली के बजैया।
शम्भु इन्द्र ब्रह्मा देवी सब
आईं बंशी राग सुनन तब
समझें ना स्वर चाल रे, मुरली के बजैया।।

------o------

बांसुरिया बजाय जा बंसी वारे श्याम।।

बंशी की धुन कानन में परी
भूली रह गई खरी-खरी
सुधा बरसाय जा बंशी वारे श्याम।
वन की हिरनी भूल रही
मुरलीधर को निरख रही
छटा दरसाय जा बंशी वारे श्याम।
बशी ने पत्थर पिघलाये
झरना झरे निशिकमल खिलाये
जियरा सरसाय जा बंशी वारे श्याम।।

------o------

हरि प्यारे की बंसी बजत आवै,
प्यारी श्री राधा जू नचत आवै।।

लता पता वृन्दावन मोह्यो
लहर जमुना की उलटी आवै, प्यारी..।
हरि जू के कानन कुंडल सोहै
प्यारी जू की चन्द्रिका चमक आवै, प्यारी..।

हरि जू के गले सोहै वनमाला
प्यारी जू के हार दमक आवै, प्यारी..।
हरि जू के चरनन नुपुर सोहै
प्यारी राधा के बिछुवा झनक आवै, प्यारी..।
जो गति ताल बजै बंसी में
सो गति ताल चलत आवै, प्यारी..।।

------o------

बाजी बाजी री बंसुरिया कदमवन।।

ऐसी तो बाजी पार निकस गई
जादू सी है गई बंसुरिया कदमवन।
कसक करेजे ऐसी लागी
बैरिन है गई बंसुरिया कदमवन।
लोट पोट भई घायल ऐसी
नागिन सी है गई बंसुरिया कदमवन।
ऐसो जहर चढ्यो सब तन में
बेसुध सी कर गई बंसुरिया कदमवन।
श्याम गारडू मिले तो उतरै
विष की लहर बंसुरिया कदमवन।।

बंसी तो बाजी आधी रात बिरज में।।

सोये बिरज में लोग, सोई हैं गोपी सब
सोये हैं ग्वाला सब, सोई हैं गैंया सब
सोये हैं बछरा सब, सोये बिरज में।
जागे बिरज में लोग, जागी हैं गोपी सब
जागे हैं ग्वाला सब, जागी हैं गैंया सब
जागे हैं बछरा सब, जागे बिरज में।
मोहे बिरज में लोग, मोही हैं गोपी सब
मोहे हैं ग्वाला सब, मोही हैं गैया सब
मोहे हैं बछरा सब, मोहे बिरज में।।

------o------

सुन-सुन रसिया, मीठी-मीठी नाहि बजाओ बंसिया।।

वा दिन बजाई तैंने घर पिछवारे
सुन-सुन रसिया, वाई दिना ते मेरे मन बसिया।
मुरली बजाई मोंकू बावरी सी कर दई
सुन-सुन रसिया, मेरी घूंघट लाज सबै नसिया।
आज हू बजाई तैंने, भाजी-भाजी आई
सुन-सुन रसिया, तेरे चरनन मेरो मन बसिया।

बाजू बंद गिरै खुल खुल के
सुन-सुन रसिया नीवी बंधन हू खसिया
वेंन बजाई मोह लई हिरनी
सुन-सुन रसिया तेरेई प्रेम धार धंसिया।

------o------

मैं कैसे आऊं कान्हा पायलिया मेरी बाजै।

बंशी में लै नाम बुलावै
सुन सुन मेरो मन ललचावै
मैं कैसे आऊं कान्हा, आंगन में ननदी गाजै
रात अंधेरी सब हैं सोये
मैं जागूं मोय नींद न आये
मैं कैसे आऊं कान्हा, पौरी में सास विराजै
पड़ी पड़ी तरफूं ज्यों मछरी
करवट लै लै भई अधमरी
मैं कैसे आऊं कान्हा, तरसूं मैं तेरे काजै
बंसी तो बंसी सी है गई
गोपी तो मछरी सी है गई
मैं आऊं चली कान्हा, मेरो मनुवा घर ते भाजै।

ऐसी वंशी श्याम बजाई, सबके मन में भई समाय।।

मोह गईं सुन सुन ब्रज नारी
भूल गईं सब कुछ मतवारी
चन्दा की खिल रही उजारी
जो जैसे तैसे उठ दौरी, तन मन में अकुलाय।
कोऊ नें जेंवत पति छोड़े
घर के कामन ते मुख मोड़े
लज्जा के सब बन्धन तोड़े
रोके हू न रुकैं ज्यों नदिया सावन में इतराय।
भूल गईं काजर और बिंदिया
लहंगा औढ़ पहर लईं फरिया
कानन में लटकाईं चुरियां
हार कमर में बांध कौंधनी माला सी लटकाय।
गहना मारग में गिर जावैं
चोटी ते फूलन बरसावैं
नैंनन ते अँसुआ ढरकावैं
साड़ी और अंगिया के बंधन खुल खुल के फहराय।

देख्यो जाय नन्द के नन्दन
जमुना तट ठाढ़े जग वन्दन
मिट गये सबही के दुख द्वन्दन
खेलन लगीं रासलीला को, नांचैं और नचाय।

------o------

सुनाय मुरली कन्हैया प्यारे,
मधुर मुरली की तान सुना रे।।

मैं आई तेरे काज दौरी-दौरी
खिरक में छोड़ गाय बछरा रे।
मैं आई तेरे काज दौरी-दौरी
छोड़ यमुना पै सब सखियां रे।
मैं आई तेरे काज दौरी-दौरी
छोड़ पनघट भरो गगरा रे।
मैं आई तेरे काज दौरी-दौरी
लै बागों ते फूल हरवा रे।
मैं आई तेरे काज दौरी-दौरी
तरस गये ढूंढते नैना रे।।

काहे बंशी तू रात बजावै रसिया, बजावै रसिया,
मोहे नैनन नींद न आवै है।।

जतन जतन कर नींद बुलाऊं
काहे बंशी की फूंक भगावै रसिया, भगावै रसिया,
मोहे नैनन नींद न आवै है।
पलका पड़ी-पड़ी मैं सुन रही
काहे बंशी सुनाय जगावै रसिया, जगावै रसिया,
मोहे नैनन नींद न आवै है।
घर के बाहर के सब सोये
मोपै रह्यो न जाय रसिया, न जाय रसिया,
मोहे नैनन नींद न आवै है।
श्याम प्रेम में भई बांवरी
मेरी घर में रुकै बलाय रसिया, बलाय रसिया,
मोहे नैनन नींद न आवै है।।

------o------

बंसी बाज रही कदमन में कैसे जाऊँ मेरी बीर

औचक सुनी मुरलिया बाजी
मेरो मनुआ है गयो राजी
सुध बुध मेरी उत ही भाजी
लोक लाज की कौंन सुने, मेरो जियरा धरै न धीर

एक तो चन्द्र उजेरी छाई
सोय रहे सब लोग लुगाई
ऐसी रैन सलौनी आई
ऐसे में को घर बैठे, मैं भाजूं मेरी बीर

कहा करैंगी पार परोसिन
ये तो जनम-जनम की बैरिन
प्रीति की रीति न जानै गंवारिन
नन्दनन्दन ते बिना मिले मेरो पजर्‌यो जाय सरीर

जाय मिली वह नन्दनन्दन सों
तन सों मन सों रोम रोम सों
जैसे बिछुरी मीन नीर सों
लोक वेद की कठिन श्रृंखला तोड़ैं गोपी बीर।

बरसाने सुन लई घोर गिरिवर पै बंसी बाज रही।।

ऊँची ऊँची बनी अटारी
सोय रही सुख सों ब्रजनारी
नींद खुली बरजोर, गिरिवर पै बंसी...।

बंसी की धुनि लागी कानन
चौंक परी सुन मीठी तानन
ये मनुआ लीयो चोर, गिरिवर पै बंसी...।

भूल गई गुरु जन की लाजैं
बंसी सुन सुन गोपी भाजैं
सब बन्धन को तोर, गिरिवर पै बंसी...।

चंदा की है चटक उजारी
फूलन की शोभा है न्यारी
नाचैं ब्रज में मोर, गिरिवर पै बंसी...।

बंसी सुन बंसीधर पाये
रास विलास किये मन भाये
देखैं हँस नैनन कोर, गिरिवर पै बंसी...।।

------o------

अरि मोपै सुन-सुन रह्यो न जाई,
ये वंशी श्याम बजाई।।

साँझ समय चौका के भीतर बैठ रसोई कर रही मैं,
वंशी सुन लकड़ी भई आली आँच बुझी और भज चली मैं,
देखूँ बाहर दीख्यो जा नें गोपी सबई रिझाई।
कांधे लकुट कामरी कारी गाय चराय घर आवत है,
चारों ओर घेर रही गऊएँ बीच बीच छवि पावत है,
कारी कारी और घुंघरारी लटुरी मुख पै छाई।
गोरज छाय रही सब अंगन तिरछो मुकुट विराजत है,
तिरछी रेख लगी कजरा की तिरछो ही मुसकावत है,
तिरछी चाल देख मो तिरछो तिरछी सैन चलाई।
बन ते आवनि मधु मुसकावनि नैन नचावनि मन मोहै,
सैनन ही सब बात भई संकेत देत अँखियाँ सोहैं,
कदम फूल लै हाथन में कदमन की ठौर बताई।

------o------

तू बंशी नेंक बजैयो रे, बंशी के बजवैया।
तेरे कारन वन को धाई
घर ते पानी के मिस आई
संग नाय ननदी को लाई
कोई मीठो गीत सुनैयो रे, ओ जसुदा के छैया।
यमुना लहर लहर लहराई
कदमन की छाया मन भाई
फूल सुगंध रही है छाई
तू भंवरा सो मंडरैयो रे, माखन के चुरवैया।
तेरी चितवन भई कटारी
तिरछी तिरछी औगुनगारी
बिना मोल बिक जावै नारी
तू यारी तनक निभैयो रे नैनन में मुसकैया।।

------o------

परलै पर गई बंसी वारे नें बजाय दई बंसिया।।
घर के सब सोये हैं लै लै अपनी खटिया,
मैं ही इकली जागूं करवट लै-लै तकिया।

बंशी चुभी कटारी जैसी मेरे बीच जिया,
मर गई मैं तो श्याम विरह में रटती पिया-पिया।
कैसे जाऊं कैसे पाऊं अपनो मन बसिया,
कैसे श्याम अंक में लागूं भुजभर कसिया।।

------o------

बाज रही आधी रात बंसी बाज रही।।

वन के हिरना वन में कूदैं लै लै हिरनी साथ
बंसी सुन चौकड़ी भूल सब ठाड़े नाये माथ
हिरनी मोह रही, बाज रही आधी रात..।
सिला पिघल गईं परवत की सुन के बंसी की तान
झरना फूट बहें धरती से झर-झर ताल बंधान
धरती मोह रही, बाज रही आधी रात..।
खिल गये कमल रात में ऐसी बाजी बंसी वीर
चंदा थम गयो बंशी सुनके थम गयो यमुना नीर
यमुना मोह रही, बाज रही आधी रात..।
बंशी सुन बादर घिर आये छांह करैं हरि ऊपर
धीमें गरज के ताल लगावैं फूलन बरसें झर झर
बदरी मोह रही, बाज रही आधी रात..।।

मेरी मुंह लगी मुरली री,
कोई लै गई चुराय, कोई लै गई चुराय।।

मुरली ते मैं गाय चराऊं
जब जंह चाहूं गाय बुलाऊं
वन लै जाऊं घर बगदाऊं
कौन जुलम मोपै कर गई री, कोई लै गई..।
मुरली ते मैं रास रचाऊं
ब्रज गोपिन को घर ते बुलाऊं
जैसे चाहूं वैसे नंचाऊं
कैसो धोखो दै गई री, कोई लै गई चुराय..।
मुरली है प्रानन ते प्यारी
मुरली बिना चैन मोहे नां री
नाम पर्‌यो मेरो मुरली धारी
भारी गजबहिं ढाय गई री, कोई लै गई..।।

------o------

हो कान्हा प्यारे सुना दे बंसुरिया।।

बंशी कारन घर ते निकसीं
हो कान्हा रे मैं यमुना किनरिया।
पनियां को मैं पनघट आई
हो कान्हा रे सिर धरे गगरिया।

भाजी-भाजी आई न कोई देखै
हो कान्हा रे टेढ़ी गोकुल नगरिया।
तोय देख मेरे बिछुवा बाजैं
हो कान्हा रे मेरी उड़ रही चुनरिया।
अब तांई तोय इकलो न पाई
हो कान्हा रे इकले में संवरिया।।

------o------

बाजी मीठी-मीठी बंसी बाजी रे रसिया बंसी के बजैया।।

मीठी बंसी बाजी भोर भुरहरे
जागी जागत ही भाजी रे रसिया, बंसी के..
मीठी बंसी बाजी पीरी फाटे
धार काढ़त ते भाजी रे रसिया, बंसी के..
मीठी बंसी बाजी सूरज ऊगे
पनियां को मैं भाजी रे रसिया, बंसी के..
मीठी बंसी बाजी जेंय रही मैं
जेंवत ते उठ भाजी रे रसिया, बंसी के..
मीठी बंसी बाजी पति संग सोई
पलका तज कें भाजी रे रसिया, बंशी के..।।

महारास

खेलैं महारास वृन्दावन राधा प्यारी औ नन्दलाल।

शरद मास की पूरणमासी
सब जीवन को है सुखरासी
लतन में फूल खिले भारी
झूम रही धरती पै न्यारी
सबै ऋतु छाईं हैं प्यारी

दोहा-सुन्दर जल औ वायु है सुन्दर है आकाश,
सुन्दर धरती सोहनी सुन्दर चन्द्र प्रकाश।
रास खेलवे को मन करकै वंशी लई गुपाल।।

मुरली मधुर बजाई गिरिधर
तीनों लोकन में फैल्यो स्वर
सुनत ही मोह गयीं ब्रजनार
भूल गईं सुधि बुधि नाहि सम्हार
चलीं सब छोड़ जगत व्यवहार

दोहा-कछु गोपी रोकीं गई, जान न पावै रास,
तन तज पहुँची सबन ते पहले नित्य विलास।

बंधन तोर चलीं मतवारी नाय लाज कौ ख्याल।।
उलटी चाल चलें ब्रजनारी
भूल चतुरता भईं गमारी
होठ पै काजर दियो लगाय
गाल पै बेंदी को चिपकाय
घूंघरू हाथन में लटकाय
दोहा-घर घर ते सब निकस के गयीं जहाँ बलबीर,
कल्पवृक्ष के निकट बहै निर्मल जमुना नीर।
आओ आओ ब्रजगोपी हंस बोलें मोहनलाल।।
कैसे तुम सब वन को आईं
रात भयानक नाहिं डराईं
बड़े घर की हो तुम सब नारि
रात में आईं कहा विचारि
हँसेंगे लोग दैंय सब गारि
दोहा-युवतिन कौ यह धर्म है मानें पति कौ देव,
भजैं पराये पुरुष कौ कुलटनि की यह टेव।
वन की शोभा देख चुकीं अब जाओ घर यहि काल।।

कपट भरी हरि की यह बानी
सुन-सुन कैं गोपी कुम्हिलानी
लगी रोवन दुख में ब्रजवाम
बही धारा असुवन उर धाम
कही विनती सुनिये घनश्याम
दोहा-तुम तजि और न जान ही तुम जीवन तुम प्रान,
तुम पति मति गति एक ही तुम मर्यादा कान।
कृष्ण बिना मर्याद धर्म सब लोक वेद जंजाल।।
धन्य धन्य बोले हरि नागर
दृढ़ है तुम्हरौ प्रेम उजागर
चलो अब खेलैं रास विहार
सम्हारे उलटे सब श्रृंगार
मांग मोती सिंदूर सम्हार
दोहा-शीश फूल पाटी कड़े बाजूबंद औ हार,
जेहरि नूपुर घूँघरू बिछुआ छल्लेदार।
रूप अनेक बनायौ हरि तब गोपी भईं निहाल।।

इधर विहार कियो राधा हरि
फूल सिंगार कियौ अंकन धरि
थकी जब प्यारी कह्यो पुकारि
तनक कांधे पै लेऊ बिठारि
लोप हरि भये छांड़ि सुकुमारि

दोहा- श्रीराधा के विरह कूँ देख्यो सब ब्रजनारि,
अपने-अपने प्रेम कौ गर्व दियौ सब डारि।
बहुत भांति रोई सुर सों तुम आओ दीनदयाल।।

प्रगट भये वृन्दावन चन्दा
घेर लई सबनें नंदनंदा
लाल की शोभा देखैं भाम
पकर पीताम्बर बोलीं बाम
निठुर तुम प्रेम न जानों श्याम

दोहा-बोले हरि या विरह सों, प्रीति बढ़ी नहिं थोर,
तुम सबको ऋणियां भयौ जनम जनम मैं घोर।
खेलैं हिल-मिल रास सबई नाचैं दै दै सुरताल।।

कोऊ तिरछे नैंन मिलावैं
कमर हिलाय बदन मटकावैं
कौंधनी बाज रही सुर घोर
फिरत में फहरें साड़ी छोर
चूम मुख लेवें चित्त कूँ चोर

दोहा-दै गलबैंया विहरहीं गावैं गीत रसाल,
ज्यों बादर संग बीजरी खेल रही थिर चाल।
कंकण माला हार फिरैं औ झुमका गोरे गाल।।

धन्य भईं रस में ब्रजनारी
बहुविधि रास कियौ गिरिधारी
किये जमुना में बहुतइ खेल
कमल फूलन की रेला पेल
सकै को गाय श्याम की केल

दोहा-चार अरब उनतीस कोटि लख चालीस असी हजार,
बरस ब्रह्म निशि सम निशा जानें न संसार।
महारास गावैं भव नासैं हियरा होय विशाल।।

------o------